॥ प्रथम अध्याय ॥
विद्यापति का जीवन परिचय

विद्यापति हिन्दी साहित्य के प्रसिध्द महाकवि हैं। बहुत से विद्वान लोगों की तरह इनके भी जीवन-वृत्त का पता नहीं चलता। परन्तु इनकी कुछ कृतियों द्वारा इनके जीवन-वृत्त पर प्रकाश डाला गया है।

जन्म-स्थान —

कवि विद्यापति का जन्म दरभंगा जिले के ' बिसपी ' नामक गाँव में हुआ था। एक ताम्रपत्र के आधार से ज्ञात होता है कि यह गाँव कवि विद्यापति को राजा शिवसिंह ने ' दान - स्वरूप ' दिया था।

पूर्वज —

विद्यापति के पूर्वज विद्वान थे और उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की थी। वे लोग मिथिला के राजाओं के दरबार में अनेक उच्च एवं प्रतिष्ठित

पदों पर भी रहे थे। विद्यापति के पिता `गणपति ठाकुर` संस्कृत के सुप्रसिध्द विद्वान थे। `गणपति ठाकुर` के पिता सन्त जयदेव ठाकुर थे और इनके पिताजी भी मैथिल ब्राह्मणों की दिनचर्या को नियमबध्द करने के लिए विख्यात थे।

जन्म --

विद्यापति के पिताजी `गणपति ठाकुर` तत्कालीन मिथिला `महाराज गणेश्वर` के दरबार में राजसभासद थे। विद्यापति की माता का नाम गंगादेवी था। ये इनके माता-पिता के इकलौते पुत्र थे। विद्यापति की जन्म-तिथि तथा मृत्यु-तिथि के बारे में कोई प्रामाणिक ग्रंथ नहीं मिलता। कुछ आधारों पर कहा जाता है कि इनका जन्म १३६० ई. में हुआ होगा।

(१) इनकी `कीर्तिलता` नामक रचना के अनुसार लक्ष्मण संवत् २५२ याने १३७० ई. में राजा गणेश्वर की हत्या असलान तुर्क व्दारा हुई थी।[१] राजा गणेश्वर के दरबार में विद्यापति पिता गणपति ठाकुर के साथ जाते थे। विद्वानों का कहना है कि यदि यह सम्य १३७० ई.माना जाय तो विद्यापति उस सम्य दस-बारह साल के होंगे। इससे यह बताया जा सकता है कि विद्यापति का जन्मकाल निश्चित रूप से ई. १३५० और १३६० ई. के मध्य हो सकता है।

(२) डॉ.उमेश मिश्र कहते हैं कि विद्यापति का जन्म ल.सं.२४१ (१३६१ ई.) में हुआ होगा। जनश्रुति के अनुसार विद्यापति लक्ष्मण संवत् २५२ में दस - ग्यारह वर्ष के थे। इसी के अनुसार डॉ. उमेश मिश्र उनका जन्म ल.सं.२४१ याने १३६१ ई. मानते हैं।[२]

मृत्यु --

जन्म-काल की तरह विद्यापति का मृत्यु-काल भी अनुमान के आधार

पर बताया जाता है। मृत्यु - काल महाराज शिवसिंह की मृत्यु-तिथि के आधार पर अनुमानित किया गया है।

राजा शिवसिंह को ल.संवत् २९६ में युध्द में वीर-गति प्राप्त हुई।[३] विद्यापति ने अपने एक पद में कहा है कि राजा शिवसिंह की मृत्यु के ३२ वर्ष पश्चात् ल.संवत ३२८ यानी १४४७ ई.में उन्होंने सपने में राजा शिवसिंह को देखा था।

`सपन देखल हम सिवसिंघ भूप।
बत्तिस बरस पर सामर रूप।।`[४]

इसके आधार पर विद्वानों ने यही सिध्द करने का प्रयास किया है कि ई.१४४७ में भी विद्यापति जीवित थे। विद्यापति की मृत्यु के सम्बन्ध में जानकारी देने वाले दो - तीन पद उपलब्ध हैं जिनके आधार से यही सिध्द होता है कि विद्यापति का मृत्यु-काल ३२८-३२९ ल.(१४४७-४८) के आस-पास ठहरता है।

पत्नी और परिवार --

विद्यापति की पत्नी का नाम धंपतिदेवी या धंदलदेई था। उनके तीन पुत्र और एक पुत्री थी। वाचस्पति, हरपति और नरपति ये तीनों पुत्र भी बड़े विद्वान थे। उनकी कन्या का नाम दुल्लाहि था। विद्यापति की पुत्रवधू चन्द्रकला (हरपति की पत्नी) अच्छी कवयित्री थी।

गुरु --

विद्यापति के गुरु प्रसिध्द पण्डित हरि मिश्र थे जो मिथिला के प्रमुख विद्वानों में से एक थे। जयदेव मिश्र और पदाधर मित्र इनके सहपाठी थे। जयदेव मिश्र से विद्यापति ने न्यायशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की थी।

आश्रयदाता --

विद्यापति ने महापण्डित हरि मिश्र से अपने बाल्य-काल से ही विद्या-

प्राप्त की थी। बचपन से ही वे राजदरबार में जाते थे। अनेक राजाओं से उनका सम्बन्ध रहा था। दरबारी कवि की पूर्ण प्रतिष्ठा उन्हें प्राप्त हुई थी। वे किशोरावस्था से ही कविता रचने लगे थे। संस्कृत अवहट्ठ(देसिल) और मैथिली भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था। इन तीन भाषाओं में उन्होंने अनेक रचनाएँ कीं।

सर्वप्रथम राजा कीर्तिसिंह का आश्रय विद्यापति को प्राप्त हुआ था। कीर्तिसिंह के शौर्य का गान करने के हेतु `कीर्तिलता` की निर्मिती हुई थी। `कीर्तिलता` अवहट्ठ भाषा में लिखी गई थी। कीर्तिसिंह के पश्चात राजा देवसिंह का आश्रय प्राप्त हुआ था। विद्यापति के तीसरे आश्रयदाता राजा शिवसिंह थे। `कीर्तिपताका` में इनके शौर्य एवं शृंगार का वर्णन किया गया है। विद्यापति की मूल शृंगारी वृत्ति `कीर्तिपताका` से ही दृष्टिगोचर होती है। महाराज शिवसिंह का राज्यकाल विद्यापति के जीवन का उत्कर्ष काल माना जाता है। `पदावली` में राजा शिवसिंह और रानी लखिमादेवी का उल्लेख हुआ है। राजा शिवसिंह के बाद रानी लखिमादेवी ने शासन संभाला था। लखिमादेवी के पश्चात राजा पद्मसिंह गद्दी पर आये थे। इन्होंने सिर्फ एक साल तक ही शासन किया। इनकी पत्नी विश्वासदेवी इनके पश्चात राजगद्दी पर बैठी। इनके आश्रय में विद्यापति ने `शैवसर्वस्वसार` तथा `गंगावाक्यावली` नामक दो संस्कृत रचनाएँ की थीं। विश्वासदेवी के पश्चात् राजा नरसिंह के शासन-काल में विद्यापति ने `विभाग-सार` नामक न्याय रीति की संस्कृत भाषा में रचना की। नरसिंह के पुत्र धीरसिंह और भैरवसिंह ने विद्यापति का सम्मान रखा था। इनके समय में विद्यापति ने `दुर्गा-भक्ति-तरंगिणी` की रचना की थी।

इस प्रकार संक्षेप में विद्यापति के बारे में यह कह सकते हैं कि विभिन्न आश्रयदाताओं से विद्यापति ने विपुल सम्मान,प्राप्त किया था। उन्होंने `अभिनव-जयदेव`, `कविरंजन`, `कविशेखर`, `मैथिल-कोकिल` आदि अनेक उपाधियाँ प्राप्त की थीं।`[५]

रचनाएँ --

विद्यापति ने संस्कृत, अवहट्ठ और मैथिली तीनों भाषा में रचनाएँ की थीं। उन्होंने संस्कृत में शास्त्रीय ग्रंथ लिखे। उस समय संस्कृत शिष्ट जनों की भाषा रह गई थी, इसलिए विद्यापति ने संस्कृत को बुध-जन की ही भाषा बताया है। उन्होंने 'कीर्तिलता' में लिखा है --

सक्कय वाणी बुहजन भावइ
पाउअ रस को मम्म न पावइ।
देसिल बयना सब जन मिट्ठा
तँ तैसन जम्पओ अवहट्ठा।[६]

इससे स्पष्ट है कि उन दिनों देसी भाषा का ही आदर था और इसी कारण इसके प्रति विद्यापति को प्रेम भी हो गया था। वस्तुत: विद्यापति ने संस्कृत और अवहट्ठ में रचनाएँ तत्कालीन परम्परा का पालन करने के हेतु ही की थीं।

विद्यापति की संस्कृत रचनाएँ --

(१) भू-परिक्रमा
(२) पुरुष-परीक्षा
(३) लिखनावली
(४) शैवसर्वस्वसार
(५) शैवसर्वस्वसारप्रमाणभूतपुराण संग्रह
(६) गंगावाक्यावली
(७) विभागसार
(८) दानवाक्यावली
(९) दुर्गाभक्तितरंगिणी
(१०) गयापत्तलक
(११) वर्षकृत्य।

अवहट्ठ भाषा में --

(१) कीर्तिलता और
(२) कीर्तिपताका की निर्मिती।

इनके अतिरिक्त विद्यापति ने मैथिली में 'पदावली' की रचना की है।

स न्द र्भ

१ लक्खणसेन नरेस लिहिअ जे पक्ख पंच बे ।। ४ ।।
तम्मह मा"सहि पढम पक्ख पंचमी कहिअ जे ।। ५ ।।
रज्ज लुध्द असलान बुध्दि बिक्कम बलैं हारल ।।६ ।।
पास बइसि विसवासि राअ गअनेसल मारल ।। ७ ।।

'कीर्तिलता' - व्याख्याकार, वासुदेवशरण अग्रवाल
साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी,
प्रथम संस्करण - १९६२
पृष्ठ-३८

२ 'विद्यापति ठाकुर'
डॉ.उमेश मिश्र
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद,
तृतीय परिवर्धित संस्करण - १९६०
पृष्ठ-४१

३ 'विद्यापति ठाकुर'
डॉ.उमेश मिश्र
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद,
तृतीय परिवर्धित संस्करण- १९६०
पृष्ठ - २८

४ 'विद्यापति ठाकुर'
डॉ.उमेश मिश्र
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद,
तृतीय परिवर्धित संस्करण-१९६० - पृष्ठ -४१

५ `विद्यापति-ठाकुर`
डॉ.उमेश मिश्र
हिन्दुस्तानी अकेडेमी
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद
तृतीय परिवर्धित संस्करण - १९६०
पृष्ठ-५६

६ `कीर्तिलता -` व्याख्याकार वासुदेवशरण अग्रवाल
साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी,
प्रथम संस्करण- १९६२
पृष्ठ-१४